ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
REVIEW OF RESEARCH

# अज्ञेय के काव्य में प्रणय–भावना

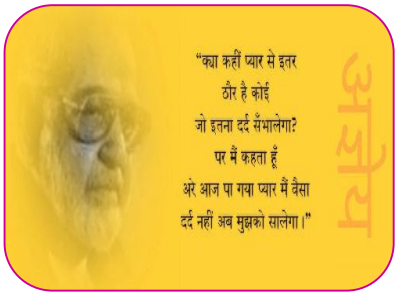


डॉ. रवींद्रकुमार शिरसाट
सहयोगी प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
श्रीमती केशरबाई लाहोटी महाविद्यालय , अमरावती.

**''प्यार**
**एक यज्ञ का चरण**
**जिसमें मैं मेध्य हूँ**
**प्यार**
**एक अचूक वरण**
**कि जिसके द्वारा**
**मैं मर्म में वेध्य हूँ।''**[1]

यह अज्ञेय द्वारा 'प्यार' कविता के माध्यम से की गई प्रेम की परिभाषा है। कवि अज्ञेय शुरू से लेकर अंत तक प्रेम का राग गाते नज़र आते हैं। प्रणय की संनिधि अनुभूत करना चाहते हैं। प्रिया की स्निग्ध छाह में रहना चाहते हैं। अज्ञेय निःसंदेह प्रेमभावना से ओत–प्रोत कवि है। अज्ञेय की दर्जनों कविताओ में प्रेमभाव की विशिष्टता एवं विविधता को देखा जा सकता है। उनका प्रेमभाव जहां प्रिया का बंधता है वहीं मुक्त भी रखता है, प्रिय का होकर – 'प्रेमोपनिषद' कविता की पंक्तियां देखिए – 'मुक्त करे तुम्हें, मौन वही तो होगा मेरा प्यार'।[2] इस प्रकार एक ओर कवि प्रेम का गीत गाना गुनगुणाना चाहते हैं वहीं दूसरी ओर प्रणय भाव के अन्तर्गत मौन में निहाल पाते हैं। अज्ञेय का प्रेमभाव विचित्र दशा में उभरता है। अपनी 'वेध्य' कविता में कवि अपनी प्रिया को देह के प्रत्येक मर्मस्थल को दिखाते हुए उस प्रत्येक मर्म को बंधने की कला भी सिखाते हैं। वे अपनी प्रिया को कहते हैं –

**''नहीं तो और क्या है प्यार**
**शिवा यों**
**अपनी ही हार का अमोघ दांव**
**किसी को सिखाने के**
**किसी के आगे**
**चरम रूप में बाध्य हो जाने के।''**[3]

कवि अज्ञेय में प्रेम के संवेदना की बार–बार तीव्र अभिव्यक्ति हायकु जैसी छोटी–छोटी कविता 'तुम क्या जानो' में देखने को मिलती है। कवि अज्ञेय अपनी प्रिया से कहते हैं–

**''तुम क्या जानो**
**कितनी लंबी होती है रात**
**अकेली**
**सिसकी की।''[4]**

यहां कवि ने अपने मन की विरहदशा को प्रकट करते हुए प्रिया की जुदाई में पीड़ा को व्यक्त किया है। अज्ञेय पलभर भी प्रिया की जुदाई बर्दाश्त नहीं कर सकते। एक रात भी उनपर भारी पड जाती है। अतः कवि सदा प्रिया का संग चाहते हैं। ''छातियों के बीच'' में अपनी प्रिया की छाती में अपनी नाक गड़ाते हुए कहता है–

**''हां यहां तुम्हारी छातियों के बीच**
**मेरा घर है! यहां!यहा!''[5]**

यहां कवि लारेन्स की उन पंक्तियों का स्मरण होता है – Between her breasts is my home, Between her breasts अज्ञेय की कविता में उनकी नायिका भी अपने प्रिय की उक्ति भी बड़ी ही मनोरम है। वह अपने प्रिय को कहती है–

**''हाँ आओं, मैं यहां तुम्हें छिपा लूंगी**
**तुम सदा यों ही रहो।''**

प्रेम के प्रति यह खुलापन कवि की अपनी विशेषता है। इनके प्रेम में सहजता है। उद्वेग या व्यग्रता नहीं। 'पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ' (1974) काव्य संग्रह की कविता 'वन झरने की धार' अज्ञेय की प्रेम कविता है। इसमें भी कवि के मन में आकुलता है, लेकिन उद्वेग कहीं नहीं। वन झारने की धार कवि के मन में, रोम–रोम में प्रिया की याद जगाती है –

**''लोंच भरी एडियाँ**
**लहराती**
**तुम्हारी चाल के संग–संग**
**मेरी चेतना**
**विहरती रही।''[7]**

कवि अज्ञेय ने विफल प्रणय का चित्रण भी अपनी छोटी–सी कविता ''समाधि लेख'' में किया है। कवि फिर उसी जगह पर जा पहुचते हैं जहां कभी मिले थे। वहां जाकर कवि को प्रिया का सहसा स्मरण होता है। वे महसूस करता है कि समुद्र, हवा, नाव, एक आकांक्षा, एक याद ये सभी मुझे बहुत प्यारे हैं और इन्हीं के लाये मैं यहां आया हूँ। पर तुम कहा हो? कौन से किनारे –

**''एक समुद्र, एक हवा, एक नाव**
**एक आकांक्षा, एक यादः**
**जो सब थे मुझे प्यारेः**
**इन्हीं के लाये मैं यहां आयाः**
**यानी तुम्हारे।**
**पर तुम कहा हो? कौन से किनारे?''[8]**

कवि यहां बिछुडे प्रिया की याद में तड़प उठते हैं। सागर, पवन, नाव, प्रिया की यादे उनके सहयात्री हैं लेकिन उनकी प्राणप्रिया पता नहीं कहा है। प्रिया की याद उनके मन मे विषाद भर देती है।

कवि अज्ञेय की कविता में विगत, विस्मृत प्रेम का मन की गहराई में घर कर चुका है। अतः कवि को रह रहकर प्रिया का स्मरण होता रहता है। उनका दिमाग कहना चाहता है कि वे उस प्रिया को भूल गये है, लेकिन अचानक सन्नाटा छा जाता है। प्रिया की याद आती है और हृदय मे दर्द उभर आता है:

**''उतना–सा प्रकाश**
**कि अंधेरा दिखने लगे,**
**उतनी–सी वर्षा**
**कि सन्नाटा सुनाई दे जाये,**
**उतना–सा दर्द की याद आये**
**कि भूल गया हूं,**
**भूल गया हूँ...।''**[9]

विफल प्रेम की वह टीस, वह चुभन कवि मन में रह रहकर दर्द जगाती है वे कोशिश करने पर भी प्रिया को भूलते नहीं।

आखिरकार एक दिन कवि की मुलाकात अपनी बिछुडी प्रिया से हो ही जाती है, लेकिन अब उनका प्यार वैसा नहीं है जैसा पहले था। वह राग रंग नहीं है जो पहले था। बस! एक औपचारिकता भर है। इस बात की पीड़ा को व्यक्त करते हुए कहते हैं –

**''हमारे बीच**
**और मेज के उपर**
**सब कुछ ठीक है, ठीक ठाक है,**
**नहीं है तो एक**
**मेज के नीचे**
**एक के पैर पर दूसरे का निर्मम दबाव**
**एक ही हथेली में दूसरे की निर्दयी चिकोटी।''**[10]

अज्ञेय ने अपने विगत प्रेम की यहाँ मर्मविदारक अभिव्यक्ति की है। अब दोनों के बीच एक औपचारिकात का रिश्ता है और दोनों के मिलने पर आंखों में चमक के स्थान पर लिहाज है, एक–दूसरों को कष्ट न पहुंचाने की अकथित व्यग्रता मात्र है। इस कविता में प्रेम की विफलता का बोध मुखारित है।

अनुभूति को स्थिति में लाने के लिए हमारे अन्तःकरण में प्रेमभावना का जागृत होना आवश्यक है। प्रणय माधुर्य प्रेम की प्रत्यक्ष भावना है। जो सीधे–सीधे हमको अनुभूति की स्थिति में ले आती है। नारी के रूप और सोन्दर्य के प्रति आकर्षण भी उसमें अत्याधिक सहायक होता है। परन्तु इसके बाद भी प्रणय का स्वरूप बहुत कुछ आंतरिक है। सौन्दर्य के माध्यम से प्रेम की जागृति के लिए सौन्दर्य का कोई भी उपादान स्नानापन्न किया जा सकता है और प्राकृतिक सौन्दर्य उसक अत्यंत प्रमुख और प्रभावी माध्यम है।''[11] प्रकृति का सौन्दर्य अज्ञेय की चेतना को एकाग्र कर शेष दुनिया से अलग कर देता है, वे सबकुछ भूलकर उस प्रकृति के सौन्दर्य में अपनी प्रेमिका के साथ तल्लीन होकर आत्मानुभूति को प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं परंतु नगर सभ्यता, यंत्रवैज्ञानिक सभ्यता उनके प्रेम में बाधा उत्पन्न करती है। अतः यहां कवि का नगर सभ्यता के प्रति व्यंग्य है।'' नगर सभ्यता में प्रेम संबंधो को जैसे नये ढंग से देखने के लिए बाध्य किया है – ''हरी घास पर क्षण भर'' की यह पंक्तियाँ देखिए –

**''आओ बैठे**
**इसी ढाल की**
**हरी घास पर।**
**माली चौकीदार का यह समय नहीं है,**
**और घास तो**

**अधुनातम मानव मन की भावना की तरह सदा बिछी है – हरी न्योतती**
**कोई आकर रौंदे**
**.....**
**आओ बैठो।**
**क्षण भर तुम्हें निहारू**
**अपनी जाती एकएक रेखा पहचानूं**
**चेहरे की आँख की अन्तर्मन की**
**और हमारी सांझे की अनगिनत स्मृतियों की।''[12]**

यहां कवि अज्ञेय ने आधुनिक सभ्यता के संदर्भ में प्रणय संबंधो की व्याख्या की है। अज्ञेय ने प्रेम को नैसर्गिक तत्व बताया है। उनकी मान्यता रही है कि प्रेम की अनुभूति प्राकृतिक है, अतः वे नैसर्गिक प्रणय के पक्षधर बने रहे। उनकी दृष्टि में प्रेम की प्राकृतिक अनुभूति आनंदमयी है सहज है अतः इस सहज प्रेम में बंध पाना तन्मयता से क्षणो को जीना अनिवार्य बताते हैं और मन में सहज उत्पन्न प्रेम भाव को छुपानेवाले स्वयं को सभ्य कहनेवाले मनुष्य के इस नियम पर व्यंग्य करते हैं, उसे नकारते हुए मुक्त प्राकृतिक प्रेम का स्वागत करते है –

**''खग युगल करों संपन्न प्रणय**
**क्षण के जीवन में हो तन्मय।**
**हो अखिल अवनि ही निमृत निलय।**
**हाय तुम्हारी नैसर्गिकता।**
**मानव निलय निराला है–**
**वह तो अपने ही से अपना प्रणय छुपानेवाला है।''[13]**

कवि अज्ञेय प्रेम तत्व में किसी प्रकार की बाधा को उचित नहीं मानते वे प्रेम को नैसर्गिक, आनंददायी के साथ साथ रसदायिनी और निष्पाप मानते हैं। उनकी नज़र में प्रेम एक पवित्र भावना है, अतः उसपर रोक लगाना या बंधन डालना पाप हैं। कवि अज्ञेय उन्मुक्त, नैसर्गिक प्रेम का समर्थन करते हुए कहते है –

**''प्रकृति है अनुभूति, वह रस दायिनी**
**निष्पाप भी है**
**मार्ग उसका रोकना ही पाप भी है,**
**शाप भी है,**
**मिलन हो मुख चुम ले,**
**आयी विदा ले राह अपनी**
**मैं न पूछूं, तुम न जानों**
**क्या रहा अन्जान मेरा।''[14]**

कवि अज्ञेय के काव्य में मानवीय प्रेम भाव का बार–बार उल्लेख हुआ है। ''भग्वदूत में इस मानवीय प्रणय की सीधी अभिव्यक्ति भी अनेक कविताओं में है। अवश्य इसमें संवेदन की उतनी गहराई नहीं, जितनी मुगध भावुकता है। घट कविता में घट की उक्ति है, जिसमें अपने को पीड़ित करनेवाली नारी को भीगोकर उसका मधुर प्रतिशोध लेने की भावना व्यक्त हुई है।''[15] 'पूर्व स्मृति' में विगत प्रेम की सविषाद स्मृति है।

**''कई बार मैं इसी राह से**
**फिर–फिर हूँ आया**
**किन्तु कहा इसमें पाऊँ**
**वह मधु की मनमोहक माया।''[16]**

जैसा की पहले कहां है कि अज्ञेय प्रेम के क्षेत्र में किसी प्रकार की बाधा को नकारते है। इस संदर्भ में स्वयं अज्ञेय ने चिंता के पहले संस्करण में कवि लिखते है– ''चिंता अगर एक प्रयोग है तो टेकनिक का प्रयोग नहीं है। मानव के प्रेम के आंतरिक इतिहास की इस अनगढ़ कहानी की रचना में टेकनीक की दिशा में कोई असाधारण कृतित्व भी मेरा लक्ष नहीं रहा ..... मेरा उद्दिष्ट यही रहा क्षेत्र विशेष में मानव के अन्तर्भावों का यथासंभव स्वाभाविक और निराडंबर प्रतिचित्रण कर दिया जाय।''[17] चिंता काव्य संग्रह में 'प्रेम का आन्तरिक' इतिहास है, जिसका यथासंभव स्वाभाविक और निराडंबर प्रतिचित्रण' हुआ है। 'चिंता' के दो खंड है (1) विश्वप्रिया (2) एकायत। प्रथम खंड में पुरूष का प्रेमसंबंधी दृष्टिकोण है दूसरे में स्त्री का। इस संग्रह में मानवीय प्रेम के उद्भव उत्थान, विकास, अन्तर्द्वन्द, ह्रास, अन्तर्मंथन,पुनरूत्थान और चरम संतुलन प्रस्तुत करने का प्रयत्न है।''[18]

कवि अज्ञेय निश्चित ही अपने युग में अन्यों से अलग थे। प्रेम के बारे में उनकी भिन्न और आधुनिक थी। अज्ञेय का प्रेम भाव आरंभ से ही उन्मुक्त रहा है। उनकी पणयभाव से युक्त कविताओं में प्लेटोनिक प्रेम के साथ ही कहीं–कहीं पर 'रक्त' को भी गंध है। अर्थात् प्रेम की मुग्ध भावना सृष्टि के बावजूद वह शरीरि भी है। जैसे छाया, छाया तुम कौन हो? उसके बाद तुरंत दूसरी रचना में अज्ञेय कहते है –

**''छाया! मैं तुम में किस वस्तु का अभिलाषी हूँ?**
**मुक्त कुंतलों की एक लट,**
**गीवा की एक बंकिम मुद्रा और बेधक मुस्कान, और बस?''[19]**

अज्ञेय अपनी प्रिया को मिलने के लिए बेताब है, मिलने की इच्छा, आकांक्षा प्रबल है। परन्तु प्रिया को न मिलने के कारण उनके हृदय में व्यथा का भाव उभरता है–

**मेरे हृदय में शिशिर हृदय से**
**सीखा करना प्यार**
**इस व्यथा से रोता रहता**
**अन्तर बारम्बार।''[20]**

अज्ञेय की प्रणय भावना में नैराश्य भी देखने को मिलता है। उनकी अनेक कविताओ में इसके दर्शन होते हैं। कवि सोचने लगता है कि यदि प्रेम अमर है तो प्रेम में इतना उतार चढाव क्यों है? अतः प्रेमी अकेला ही प्रेम के मार्गपर चलने के लिए तैयार होकर कहता है – ''आज चल रे तू अकेला।'' कवि प्रणय की पीड़ा की अनुभूति करते हुए – ''निराश प्रकृति अब बिहाग गाती है।'' और दिन उखड़ासा लगता है।'' इसके अतिरिक्त 'अतीत की पुकार', 'मैं तुम्हारे ध्यान में हूँ', 'नाम तेरा', 'ताजमहल की छाया में', 'चिंतामय वितीया', आदि में कवि के प्रणय की व्यथा वेदना का वर्णन हुआ हैं। कहीं–कहीं पर तो कवि इर्षाभाव में नारी को तितली कहकर उसे चंचल और अस्थिर गति कहता है और कभी छलना कहते हुए नारी को खोटी मुद्रावाली कहते हैं। लेकिन उनके प्रेमभाव में निराशा ही नहीं आशा भी है। कुछ ही समय के बाद कवि समझ जाता है कि प्रिया प्रेमरूपी प्रज्वलित रूप की शिखा है और वह छाया है।

एकायवन में नारी की प्रणयानुभूति का वर्णन अज्ञेय ने किया है। इसमें नारी के प्रणय के भावोच्छवास के गीत है। उसमें मिलन, अभिलाषा, हास, उल्लास के साथ ही अश्रु, रूदन, प्रणय की पीड़ा का अनुभव करती है –

**''मै गाती हूँ, पर गीतो के**
**भाव जगानेवाला तू,**
**मैं गाती हूँ, पर मेरी गति में**
**जीवन लानेवाला तू।''[21]**

इस प्रकार नारी अपने प्रिय के संबंधो के बारे में अपने हृदय के भावों को व्यक्त करती है। तो कभी वह कहती है –

**मैं तुम क्या? बस सखा–सखी!**
**तुम हो ओ जीवन के स्वामी,**
**मुझसे पूजा पाओ**
**या मैं ही होउँ देवी**
**जिसपर तुम अर्ध्य चढाओं।''[22]**

अज्ञेय ने स्त्री–पुरूष संबंधो की आधुनिक अवधारणा को स्पष्ट करते हुए स्त्री को पुरूष के जितना ही सम्मान दिया है, बल्कि उसे देवी कहकर सखी कहकर उसका महत्व स्पष्ट किया है। अज्ञेय के काव्य में स्त्री–पुरूष की नोक–झोंक भी मिलती है, जहाँ प्रिय ने प्रिया का कठोर, छलना, चंचल कहा वहीं नारी भी प्रिय को सचेत करती है – वह प्रेमिका होकर भी अपना अस्तित्व खोना नहीं चाहती। वह स्वाभिमान से, आत्मगौरव से ओतप्रोत है।

**''पुरूष। जो मैं देखती हूँ, वह मैं भी नहीं,**
**किन्तु जो मैं हूँ, उसे मत ललकारो!**
**तुम्हें क्या यह विश्वास हो गया है कि**
**मुझ में अनुभूति क्षमता नहीं है?**
**मुझमें उत्ताप है, मुझमें दीप्ति है,**
**मुझमें उत्ताप है, मुझमें दीप्ति है,**
**मैं भी एक प्रखर ज्वाला हूँ,**
**परन्तु मैं स्त्री भी हूँ,**
**इसलिए नियमित हूँ, तुम्हारी सहचरी हूँ,**
**इसलिए तुम्हारी मुखापेक्षी हूँ,**
**तुम्हारी प्रणयिनी हूँ, इसलिए तुम्हारे स्पर्श के आगे**
**विनम्र और कायल हूँ।''[23]**

''अज्ञेय के काव्य में प्रणयानुभूति की सशक्त अभिव्यक्ति और नर नारी के पारंपारिक संबंधो की विवृत्ति उन्हें रोमांटिक कवियों की पंक्ति में बिठा देती है। उनके आरंभिक काव्य में रीतिकालीन मांसलता, छायावादी एन्द्रियता और नर–नारी की संघर्ष चेतना दिखाई देती है। उनकी प्रणयानुभूति में रक्त की भाषा है, शरीर का गुदगुदापन है भाववेग और नर–नारी की स्वतंत्रता का आख्यान है।''[24]

अज्ञेय ने नर–नारी के सबंधों पर अपनी मौलिक दृष्टि से विचार किया है। प्रकृति और नारी चित्रण में कवि का आदर्शवादी सौन्दर्यबोध यथार्थ के धरातलपर उतरने को व्यग्र दिखलाई देता है। 'चिन्ता में नारी और पुरूष के पारस्पारिक संबंधों की समस्या ही निवेचित और विश्लेषित हुई है। इसमें अज्ञेय ने स्त्री और पुरूष के गतिशील अपनी स्वीकृति प्रदान की है। वे पुरूष और स्त्री के संबंधो को मात्र सामाजिक संबंधो की भूमिका पर ही स्वीकार नहीं करते, अपितु वे उन्हें चिरंतन पुरूष और चिरंतन नारी के संबंधों के रूप में भी लेतें है।

## निष्कर्ष :–

आलोच्य अध्ययन में कवि अज्ञेय का नारी के प्रति स्वार्थ दृष्टिकोण बिलकुल स्पष्ट हो जाता है। निश्चित ही अज्ञेय ने स्त्री को पुरूष की सहचरी, सखी मानकर उसकी प्रतिमा को उँचा उठाया है। नारी उनकी नज़र में सौभाग्यगर्विता, प्रखर ज्वाला, बुद्धिवान, भावुक, शक्तिशाली, प्रणयिनी और विनम्र भी है। अज्ञेय का प्रणयभाव कविता में सहज स्वाभाविक प्रतीत होता है। इनके प्रेमभाव में सच्चाई साफ झलकती है। अज्ञेय के काव्य में जो प्रेमभाव प्रकट हुआ है उसपर छायावादी कविता का प्रभाव मिलता है। इनकी प्रेम गीतों में भावाकुलता की कोई कभी नहीं है। अज्ञेय ने नारी के कई रूपों को दर्शाते हुए उसे अलौकिक के स्थान पर लौकिक मनुष्य के रूप मं प्रकट किया हैं। कहीं भी नारी के मान सम्मान को ठेस नही पहुंचने दी बलिक नारी को समाज की इकाई के

रूप में स्थापित करना उनका लक्ष्य था ऐसा प्रतीत होता है। ओय ने नारी को शक्तिरूपा मानते हुए उसे पुरूष से श्रेष्ठ बताया है। 'गृहस्थ' कविता में अज्ञेय कहते हैं कि स्त्री, पुरूष की सबसे बड़ी शक्ति है।

## संदर्भ :–


1. क्योंकि मैं उसे जानता हूँ – अज्ञेय, पृ. 71
2. सागरमुद्रा – अज्ञेय, पृ. 32
3. क्योंकि मैं उसे जानता हूँ – अज्ञेय, पृ. 70
4. सागरमुद्रा – अज्ञेय, पृ. 54
5. वहीं, पृ. 37
6. वही, पृ. 37
7. पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ – अज्ञेय, पृ. 21
8. वही, पृ. 20
9. वही, पृ. 19
10. वही, पृ. 18
11. अज्ञेय के काव्य में क्षण भर – सुनीता सक्सेना, पृ. 99
12. हरी घास पर क्षणभर – अज्ञेय, पृ. 59
13. पूर्वा – अज्ञेय, पृ. 82
14. पूर्वा – अज्ञेय, पृ. 102
15. अज्ञेयः एक अध्ययन, भोलाभाई पटेल, पृ. 7
16. पूर्वा – अज्ञेय, पृ. 32
17. चिन्ता – अज्ञेय, पृ. 07
18. अज्ञेयः एक अध्ययन, भोलाभाई पटेल, पृ. 7
19. चिन्ता – अज्ञेय, पृ. 20
20. वही, पृ. 26
21. वहीं, पृ. 107
22. वहीं, पृ. 115
23. वहीं, पृ. 138
24. आधुनिक प्रतिनिधि कवि – शांतिस्वरूप गुप्त, पृ. 102